भारत-नेपाल का अटूट सम्बन्ध और चुनौतियाँ

खूम बहादुर खड़का

भूतपूर्व गृहमंत्री, नेपाल सरकार

(14 फरवरी 2015 को महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''21 वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध चुनौतियाँ एवं विकल्प'' के उद्घाटन सत्र में दिये गये उद्बोधन के आधार पर)

ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा सभ्यतामूलक सम्पर्क आर्थिक सम्बन्ध तथा लोगों के बीच गहरे सम्बन्ध हैं, जिसे अक्सर 'रोटी-बेटी के सम्बन्ध' के रूप में वर्णित किया जाता है। भारत में मनायें जाने वाले सभी त्यौहार नेपाल में भी उतने ही उल्लास से मनायें जाते है। भारत और नेपाल के बीच कुछ समस्याएँ है जिसे सुस्ता तथा काला पानी विवाद। इन विवादों को राजनीतिक सूझबूझ और आपसी समझ के आधार पर हल किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जो भी समस्याएँ हैं, वह केवल अपने राजनैतिक स्वार्थ सिद्धि (विशेषकर कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा) हेतु चर्चा में लाई जाती है। इसलिए भारत तथा यहाँ के नागरिकों से अनुरोध है कि भारत से जो कम्युनिस्टों के थोड़ा बहुत समर्थन एवं सहयोग प्राप्त होता है, उसे समाप्त किया जाए।

नेपाल पर बार-बार यह भी आरोप लगाया जाता है कि नेपाल, भारत विरोधी गतिविधियों, आतंकवादियों और तस्करों की शरणस्थली बन गया है तथा भारत, नेपाल के बीच खुली सीमा के कारण ये सभी आसानी से भारत में प्रवेश कर हिंसात्मक गतिविधियों को सम्पन्न करते है। लेकिन नेपाल की भी कुछ बाध्यताएं है नेपाल के पास संसाधन स्रोत कम हैं वह अपने बल बूते घुसपैठ और सीमापार की सभी समस्याओं से नही निपट सकता है। इन सभी समस्याओं से निपटने के लिए नेपाल और भारत को मिलकर काम करना पड़ेगा। भारत और नेपाल के नागरिको को मिलकर छल-पल (बहस/वाद-वाद) करना चाहिए कि कौन-कौन सी समस्याएँ है और उनको किस प्रकार हल किया जा सके?

हिन्दु धर्म और हिंदुत्व भारत और नेपाल को एक करता है। 5 प्रतिशत से भी कम लोग नेपाल में इसाई और मुस्लिम हैं फिर भी नेपाल को धर्मनिरपेक्ष देश घोषित करना यह एक सीधे-सीधे थोपा गया निर्णय प्रतीत होता है। नेपाल को धर्मनिरपेक्ष घोषित करने में मुख्य भूमिका माओवादियों और कम्युनिस्टों की है जो साम्यवादी सिद्धांत के अनुरूप ''धर्म को अफीम के समान'' मानते है, यह उनकी ही देन है। नेपाल अपनी इस गलती को सुधारने के लिए प्रयासरत है। 94 प्रतिशत हिन्दु जनसंख्या वाला देश धर्मनिरपेक्ष नहीं हो सकता है। नेपाल के विकास के लिए एवं उसको पुनः हिन्दु राष्ट्र घोषित करवाने में भारत की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो सकती है बिना भारत की सहायता के नेपाल हिन्दु राष्ट्र नहीं बन सकता है।

नेपाल में घटी किसी भी घटना का सीधा सम्बन्ध भारत पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं। भारत और नेपाल दो शरीर है लेकिन आत्मा एक है। राजनीतिक स्तर पर कुछ मुद्दे है जो आपस में सुलझाने होगें। जितना भारत, नेपाल को सहयोग करता है उतना कोई भी देश नहीं करता है। नेपाल एक स्थल अवरूद्ध देश है इसलिए भी नेपाल अपने विकास तथा आयात-निर्यात के लिए भारत पर निर्भर है। वर्तमान समय में नेपाल के ज्यादातर निजीकरण में चीनी कम्पनियाँ शामिल है जो नेपाल में धीरे-धीरे अपना प्रभाव बढ़ा रही हैं। नरेन्द्र मोदी जी के शासनकाल में जो भारत-नेपाल सम्बन्धों में जो बादल थे, वे हटे हैं। अब समय आ गया है कि वह इससे और आगे बढ़े, जिससे भारत नेपाल सम्बन्धों को नई ऊचाईयों पर पहुँचाया जा सके।

वर्ष 2005 में जो समझौता हुआ उसमें भी भारत का सहयोग प्रमुख था। नेपाल में जो माओवादियों का बढ़ा हुआ मनोबल है उसको तोड़ना होगा, नेपाल में हो रही माओवादी हिंसात्मक संघर्ष को रोकना होगा। इसमें नेपाल का कोई देश प्रमुख रूप से भागीदार हो सकता है तो वह भारत है। भारत, नेपाल में माओवादियों पर लगाम लगाने उन्हें सीमित करने में सहयोग प्रदान कर सकता है।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता का कारण वहाँ की सामाजिक-आर्थिक असमानता भी है। काठमाण्डू घाटी तथा पूर्वी नेपाल को छोड़कर पश्चिमी नेपाल की बहुत अधिक आबादी भारत-नेपाल तथा भूटान में भटकती रही है। उनकी अनिश्चित राष्ट्रीय पहचान हिंसा तथा अपराध के प्रति प्रेरित करती है। नेपाल की विदेश नीति भी इन आन्तरिक कारणों से प्रभावित होती है। इसलिए भारत-नेपाल सम्बन्धों में यह कारक भी महत्वपूर्ण है। नेपाल के आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं को दूर किया क्योंकि ये समस्याएं अन्य बहुत सी समस्याओं को जन्म देती है।

दक्षिण एशियाई परिक्षेत्र में बड़े भाई की भूमिका में होनें के नाते भारत को आगे बढ़कर मार्गदर्शन करना होगा और पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वाह करना होगा। तभी नेपाल उसके पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेगा और तभी भारत और नेपाल विकास कर सकेगें। क्योंकि स्थिर और विकसित नेपाल ही भारत के साथ स्थाई मित्रता और विश्वास को बनायें रखने में सहयोग कर सकता है तथा भारत नेपाल सम्बन्धों के नये आयाम स्थापित कर सकता है।

सम्पादक- **डा० शुभ्रांशु शेखर सिंह, असि० प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाराणा प्रताप पी०जी० कालेज जंगल धूसड़, गोरखपुर**